मूल हिंदी में

भारत सरकार
पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 2134
06.08.2026 को उत्तर के लिए

सूरत में समुद्र के अचानक पीछे खिसकने की स्थिति

2134. श्री बाबूभाई जेसंगभाई देसाई :

क्या **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार के संज्ञान में गुजरात के सूरत के तटीय क्षेत्र में समुद्र के अचानक पीछे हटने (ड्राई सी शोर) की घटना आई है;

(ख) यदि हाँ, तो इसके क्या कारण हैं;

(ग) क्या इस संबंध में ज्वार-भाटा, जलवायु परिवर्तन अथवा अन्य प्राकृतिक कारणों का अध्ययन कराया गया है;

(घ) क्या इस घटना का स्थानीय नागरिकों, मत्स्यन, समुद्री जैव विविधता एवं तटीय पर्यावरण पर कोई प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है; और

(ङ) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा तथा इस संबंध में सरकार द्वारा किए गए निवारक उपाय एवं जन जागरूकता संबंधी पहलें क्या-क्या हैं?

उत्तर

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री
(श्री कीर्तवर्धन सिंह)

(क) से (ग): गुजरात सरकार ने गुजरात के सूरत स्थित तटीय क्षेत्र में समुद्री किनारे के अचानक पीछे हटने (सूखा समुद्री तट) की घटना की पुष्टि की है। राज्य सरकार द्वारा दी गई सूचना के अनुसार, यह घटना सामान्यतः प्राकृतिक ज्वारीय उतार-चढ़ाव के कारण होती है। खंभात की खाड़ी का शंकुआकार स्वरूप होने के कारण यहाँ ज्वार-भाटा का स्तर उच्च रहता है तथा सूरत का तट ढलान युक्त एवं उथला होने के कारण भाटा आने के समय समुद्र का जल काफी दूर तक पीछे हट जाता है, जिससे तट पर कीचड़ और रेत एकत्र हो जाता है।

अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र, अहमदाबाद ने सूचित किया है कि वह उपग्रह चित्रों की सहायता से कीचड़युक्त तटीय मैदानों की स्थलाकृति का आकलन तथा उच्च ज्वार एवं निम्न ज्वार की स्थितियों में इन क्षेत्रों के जलमग्न होने एवं उभरने का मॉडल तैयार करने संबंधी अध्ययन कर रहा है। इन अध्ययनों से निम्न ज्वार की स्थिति में समुद्र के प्राकृतिक रूप से पीछे हटने की प्रक्रिया का अनुकरण किया जाता है।

(घ) एवं (ङ): भारत सरकार के मत्स्य पालन विभाग द्वारा दी गई सूचना के अनुसार, ऐसी कोई अध्ययन रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई है जो यह दशार्ती हो कि इस घटना का स्थानीय निवासियों, मत्स्य पालन, समुद्री जैव विविधता अथवा तटीय पर्यावरण पर कोई प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। तथापि, मत्स्य पालन विभाग ने राज्य सरकारों तथा संबंधित पर्यावरणीय एजेंसियों के समन्वय से तटीय सहयता को सुदृढ़ करने के लिए उपाय किए हैं। वर्ष 2020-21 से 20,050 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ संचालित प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के अंतर्गत आपदा-सहय अवसंरचना, पारिस्थितिकी तंत्र के पुनरुद्धार तथा संधारणीय मत्स्य पालन पद्धतियों के लिए सहायता प्रदान की जाती है। विभाग की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से जलवायु-अनुकूल आजीविका गतिविधियों को भी प्रोत्साहन दिया जाता है, जिनमें समुद्री शैवाल, खाद्य एवं सजावटी मछलियों, द्विकपाटी जलीय जीवों तथा अन्य प्रजातियों की जलीय कृषि एवं समुद्री कृषि शामिल हैं।

*****